दैनिक जागरण मुजफ्फरपुर, 7 दिसंबर 2012

मुजफ्फरपुर आसपास जागरण

गन्ने की खेती को बढ़ाएं

पानापुर/मोतीपुर (मुजफ्फरपुर), निप्र. भारतीय कृषि अनुसंधान केंद्र लखनऊ के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने कहा है कि बिहार में गन्ना उत्पादन का गौरवशाली इतिहास रहा है। अधिकतर चीनी मिलें बंद होने के कारण बिहार में सिर्फ 2.50 लाख हेक्टेयर में गन्ने की खेती हो रही है जो चिंता का विषय है। वे गुरुवार को मोतीपुर गन्ना शोध केन्द्र में बिहार में गन्ना उत्पादन एवं प्रबंधन विषय पर आयोजित कृषक प्रशिक्षण एवं जागरुकता कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए अधिक से अधिक क्षेत्रफल में नवीन तकनीक द्वारा गन्ने की खेती पर विशेष बल दिया। संस्थान द्वारा विकसित उन्नत प्रजाति कोलख 94184 तेजी से किसानों के बीच लोकप्रिय बन गया जिसका सिवान के किसान लाभ उठा रहे हैं। किसानों को गोल गड्ढा बुआई विधि एवं अन्य तकनीकी अपनाने की सलाह दी।

प्रशिक्षण व जागरुकता कार्यक्रम में वैज्ञानिक जागरण

वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एके साह ने कहा कि बिहार में गन्ना की खेती 3.5-4.0 लाख हेक्टेयर बढ़ाने में संस्थान उत्सुक है। मोतीपुर गन्ना शोध केन्द्र को 27 करोड़ की लागत से और विकसित किया जाएगा। बिहार विजन 2030 में गन्ना का उत्पादन 156 टन करने की आवश्यकता है। इस दौरान गन्ना की खेती पर आधारित प्रसार साहित्य नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। वैज्ञानिक डा. एडीपाठक ने किसानों को गेहूं, मक्के की तरह गन्ना की खेती की सलाह दी। कार्यक्रम को डा. रामजी लाल, डा. डीके श्रीवास्तव, डा. राधा जैन, डा. एके सिंह, केन्द्र के प्रभारी डा. देवेन्द्र कुमार, ईख शोध संस्थान पूसा के निदेशक डा. एम आलम ने भी संबोधित किया।

प्रभात खबर
मुजफ्फरपुर

शुक्रवार
मुजफ्फरपुर 7 दिसंबर, 2012
मार्गशीर्ष कृष्ण 9 संवत 2069
पृष्ठ : 16
आमंत्रण मूल्य : ₹ 3

आधुनिक तरीके से गन्ने की खेती से होगा लाभ

कार्यक्रम को संबोधित करते वैज्ञानिक.

प्रतिनिधि ■ मोतीपुर

बिहार में गन्ना का गौरवशाली इतिहास रहा है. पिछले कुछ वर्षों से बिहार के चीनी उद्योगों में मंदी छा गयी है. वर्तमान में सिर्फ 2.50 लाख हेक्टेयर में ही गन्ने की खेती की जा रही है, जो चिंता का विषय है.

उक्त बातें भारतीय गन्ना अनुसंधान केंद्र लखनऊ के निदेशक डॉ सुशील सोलोमन ने गुरुवार को मोतीपुर गन्ना शोध संस्थान में बिहार में गन्ना उत्पादन व प्रबंधन विषय पर आयोजित एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण व जागरुकता कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा. जिसका लाभ निकट भविष्य में किसानों को मिलेगा. आधुनिक तरीके से गन्ने की खेती से किसानों की अर्थव्यवस्था में सुधार होगा. उन्होंने कहा कि भारतीय गन्ना अनुसंधान केंद्र लखनऊ इस दिशा में हर संभव प्रयास करेगा. संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ एके साह ने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित अन्य तरीकों से किसान गन्ने के खेत में अन्य फसल बो कर अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर सकते है. इसके लिए गन्ने की रोपाई के दौरान दोनों क्यारियों में 35 सेमी की दूरी रखनी चाहिए.

इसके बीच तिलहन, मक्का व आलू रोप सकते है. वैज्ञानिकों ने शिविर स्थल पर आधुनिक तरीके से गन्ने की बुआई के लिए संस्थान द्वारा तैयार मशीन का प्रदर्शन किया गया. मौके पर पूसा कृषि विवि के निदेशक डॉ एस आलम,वैज्ञानिक डॉ एडी पाठक,डॉ रामजी लाल, डॉ टी के श्रीवास्तव, डॉ एसएन सुशील, डॉ राधा जैन, डॉ एके सिंह, डॉ एके साहा ने कार्यक्रम को संबोधित किया. प्रशिक्षण संयोजक डॉ एडी पाठक व डॉ देवेंद्र कुमार ने केंद्र की गतिविधियों के बारें में किसानों को अवगत कराया.

हिन्दुस्तान
• मुजफ्फरपुर • शुक्रवार • 07 दिसम्बर 2012

उन्नति में गन्ना की खेती सहायक

मोतीपुर। गन्ना प्रजनन केंद्र, मोतीपुर में गुरुवार को गन्ना उत्पादन एवं प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। निदेशक भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ डॉ. सुशील सलोमन ने कहा कि प्रशासन यहां गन्ना का क्षेत्रफल बढ़ाने का हरसंभव प्रयास कर रहा है। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ अपने मोतीपुर स्थित क्षेत्रीय केन्द्र की सहायता से नवीनतम गन्ना खेती की जागरूकता गन्ना काश्तकारों में फैला कर यहां गन्ना का क्षेत्रफल बढ़ाने में लगा है। उन्होंने कहा कि किसानों की आर्थिक उन्नति में गन्ना की खेती सहायक है। संस्थान द्वारा विकसित उन्नत प्रजाति 94184 किसानों के बीच लोकप्रिय हो रहा है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए.के.साह ने कहा कि शरदकालीन गन्ने के साथ गेहूं, धनिया तथा सब्जियों की सह खेती संभव है। मौके पर ईख शोध संस्थान, पूसा के निदेशक डॉ. ए.आलम के अलावा वैज्ञानिक डॉ. एडी पाठक, डॉ. रामजी लाल, डॉ. टीके श्रीवास्तव, डॉ. राधा जैन, डॉ. ए.के.सिंह ने भी प्रशिक्षण दिया।